अध्याय - 6

अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष (1857 का विद्रोह)

पिछले अध्यायों में आप ने यह जाना कि भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना कैसे हुई एवं उसने व्यवस्था में क्या परिवर्त्तन किया। उन परिवर्त्तनों का लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, इसे भी आपने देखा। अंग्रेजी सरकार के काम से भारतीय समाज का शायद ही कोई हिस्सा ऐसा रहा हो जिसके जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। जमींदार, नवाब, राजा, किसान, व्यापारी, शिल्पकार, बुनकर, धनवान इत्यादि, इन सभी लोगों का जीवन अस्थिर हो गया। कई राजाओं के राज्य छिन गये, जमींदारों और नवाबों की जमींदारियां नीलाम हो गयीं, किसानों की हालत और दयनीय हो गई, तथा शिल्पकारों एवं बुनकरों का तो काम ही बन्द हो गया। व्यापारी स्वतंत्र रूप से व्यापार नहीं कर पा रहे थे और धनवान लोग व्यापार और छोटे–मोटे उद्योग में जो पैसे लगा कर लाभ कमाते थे वह भी बन्द हो गया। इन सबके बारे में आपने पिछले पाठों में पढ़ा है।

अंग्रेजी सरकार से दुखी ये सभी लोग समय–समय पर, अलग अलग स्थानों पर, अलग–अलग तरीकों से अंग्रेजी शासन का विरोध भी कर रहे थे। मगर उनके विरोध में एकजुटता नहीं थी। छोटे क्षेत्रों में सीमित उनके संघर्ष बड़ी आसानी से सरकार द्वारा दबा दिए जाते थे।

फिर 1857–58 में ऐसी क्या बात हुई कि इन्हीं लोगों ने एकजुट होकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ एक बड़ा संघर्ष शुरू कर दिया? आप यह तो जानते ही हैं कि कोई भी शासन अपने को बनाए रखने के लिए पुलिस और सेना रखती है। आज भी आप यह देखते हैं। कल्पना करें कि यही सेना और पुलिस शासन का विरोध करने लगे तो क्या होगा? सरकार कठिनाई में पड़ जाएगी। 1857 में अंग्रेजी सरकार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अंग्रेजी सरकार की सेना में शामिल भारतीय सैनिकों की एक बड़ी संख्या ने शासन का विरोध आरंभ

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कर दिया। अब सवाल यह उठता है कि वर्षों तक उनके लिये काम करने वाले भारतीय सैनिकों ने ऐसा क्यों किया? तो निश्चित रूप से इन सैनिकों के साथ भी कुछ ऐसी बात जरूर रही होगी जिसने उन्हें विद्रोह करने के लिए उकसाया। आइये अब उन कारणों को जानने का प्रयास करें।

Hkkjrh; lSfudksa dh f'kdk;rsa

अंग्रेजों ने भारत में अपना अधिकार भारतीय सैनिकों की मदद से ही स्थापित किया था। जैसे–जैसे पुराने भारतीय राज्य समाप्त होते गए उन राज्यों के लिए काम करने वाले सैनिक भी बेरोजगार हो गए। इस स्थिति में उन्होंने अंग्रेजी सरकार में नौकरी कर ली। उनके लिए यह महत्वपूर्ण नहीं था कि राजा कौन है। उन्हें तो सबों के लिए लड़ाई ही लड़नी होती थी, बदले में उन्हें वेतन मिलता था। उनके लिए अपना और अपने परिवार का जीवन चलाना ज्यादा जरूरी था। भारत में अंग्रेजी सरकार की सेना में भारतीयों की संख्या काफी अधिक थी। इसमें भी अवध प्रांत के सैनिक सबसे अधिक थे।

अंग्रेजी सेना में काम करने वाले भारतीय सिपाही खुश नहीं थे। उन्हें अंग्रेज सिपाहियों की अपेक्षा बहुत कम वेतन मिलता था जबकि काम वे बराबर ही करते थे। अंग्रेजी सेना में एक भारतीय पैदल सिपाही को 7 रु. और घुड़सवार सिपाही को 27 रु. मिलते थे। दूसरे, भारतीय सिपाही चाहे कितना भी अच्छा काम करे उन्हें हवलदार या सूबेदार से ऊँचा पद नहीं दिया जाता था। ये दोनों पद काफी छोटे होते थे। सेना के सारे बड़े पद अंग्रेजों के लिए सुरक्षित होते थे। सेना के लिए बनाए गए नियमों से भी वे खफा थे। नए नियमों के अनुसार भारतीय सैनिकों को दूसरे देशों के साथ होने वाले युद्धों के लिए समुद्र पार भी जाना होगा, ऐसा प्रावधान किया गया। यह कानून 1856 में बना था। हिन्दू धर्म में उस समय समुद्र पार करके दूसरे देशों में जाने को पाप माना जाता था। इसके अतिरिक्त अंग्रेज अफसर और सिपाही भारतीय सैनिकों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार भी करते थे।

आज ही के तरह उस समय भी अधिकांश सिपाही किसान परिवार से आते थे। जब अंग्रेजों की नई भूमि व्यवस्थाओं से किसान बर्बाद होने लगे तो सैनिकों पर भी इसका प्रभाव

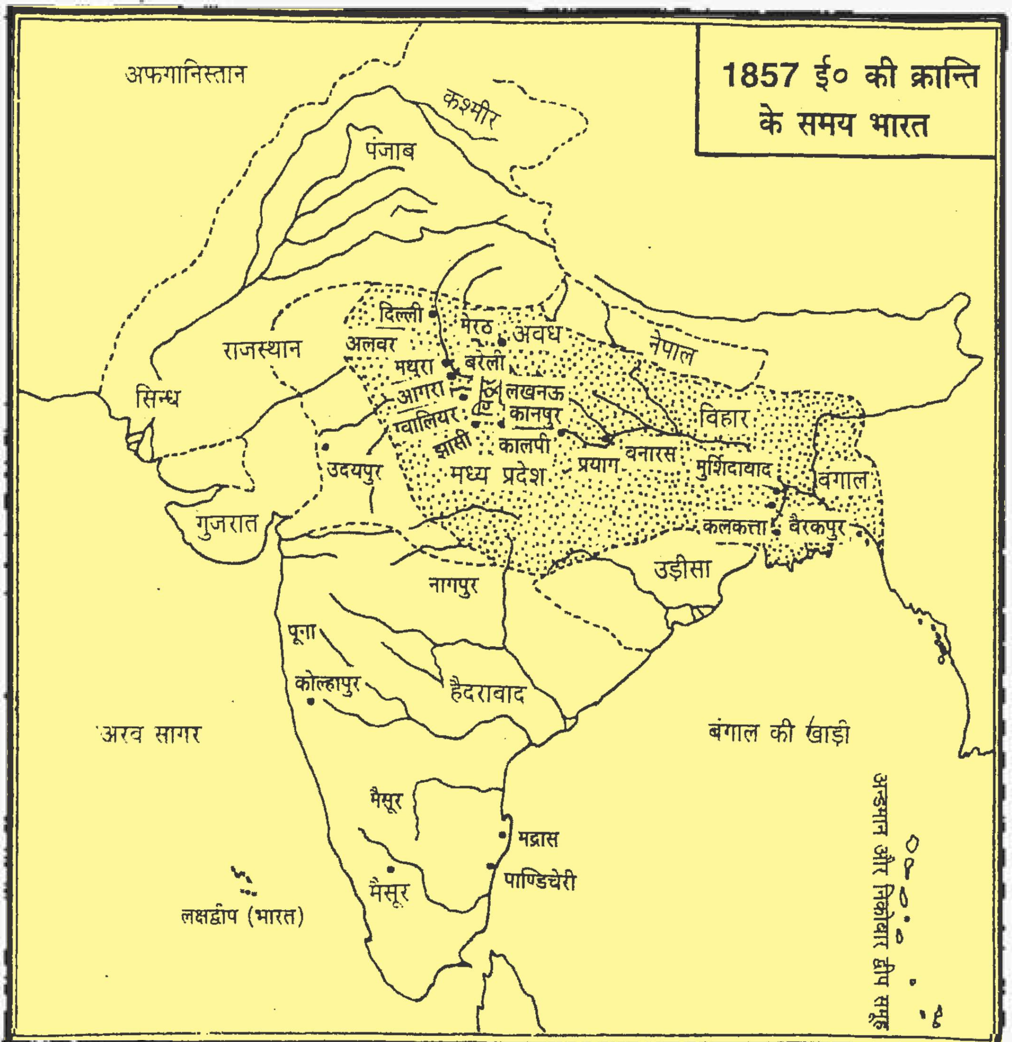

1857 का विद्रोह

भारतीय नायक (विद्रोह में)	समय (विद्रोह का)	केन्द्र	ब्रिटिश नायक (विद्रोह दबाने के)	समय (विद्रोह दबाने का)
[illegible] (सैन्य नेतृत्व)	11,12 मई, 1857	दिल्ली	निकलसन, हडसन	21 सितम्बर, 1857
[illegible]	5 जून, 1857	कानपुर	कैम्पबेल	6 दिसम्बर, 1857
[illegible]	4 जून, 1857	लखनऊ	कैम्पबेल	मार्च 1858
[illegible]	जून 1857	झांसी, ग्वालियर	ह्यूरोज	3 अप्रैल, 1858
[illegible]	1857	इलाहाबाद, बनारस	कर्नल नील	1858
[illegible]	अगस्त 1857	जगदीशपुर (बिहार)	विलियम टेलर, मेजर विंसेट आयर	1858
[illegible]	1857	बरेली		1858
[illegible]	1857	फैजाबाद		1859
[illegible]	1857	फतेहपुर	जनरल रेनर्ड	1858

पड़ा। अतः अंग्रेजी नीतियों से सामाजिक जीवन में जो बदलाव आ रहे थे, सैनिक उससे सीधे तौर पर प्रभावित हो रहे थे।

1856 में एक अंग्रेज अधिकारी गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी से सेना के समाज से जुड़ाव को स्पष्ट करते हुए कहता है कि 'हमारी सेना देश के किसानों के बीच से बनी है। किसानों के कुछ अधिकार हैं। यदि इन अधिकारों का हनन हुआ, तो हम ज्यादा दिनों तक सेना पर भरोसा नहीं कर सकेंगे। यदि आप भारतीय जनता की संस्थाओं पर आघात करेंगे तो सेना भारतीय जनता की हमदर्द हो जाएगी, क्योंकि वह इसी के बीच से बनी है। किसी व्यक्ति के अधिकारों का हनन का मतलब है किसी–न–किसी सैनिक के अधिकारों का हनन क्योंकि हर सैनिक किसी–न–किसी का या तो बाप होता है, या बेटा या भाई या दूर का कोई रिश्तेदार।'

xfrfof/k&vki bl vxt vf/kdkjh d dFku dk Hkkjrh; lfudk d lnHk e fdl :i e n[krs g &

इसी समय इन सैनिकों के सामने एक बड़ी समस्या आयी। यह समस्या थी नए किस्म की 'इन्फील्ड राइफलें'। इस राइफल के जो कारतूस होते थे, उस पर कागज का एक मोटा खोल चढ़ा होता था। खोल बनाने में गाय–सूअर एवं अन्य जानवरों की चर्बी का इस्तेमाल किया जाता था। कारतूस में भरने के पहले खोल को दाँत से काट कर हटाना पड़ता था। (इसे आप चित्र में देख कर समझ सकते हैं) इस बात ने हिन्दू और मुसलमान दोनों सैनिकों को उत्तेजित कर दिया। आप जानते हैं कि गाय हिन्दुओं के लिए पवित्र है जबकि सूअर मुस्लमानों के लिए वर्जित है। सैनिकों को ऐसा लगा कि अगर वे दाँतों से कारतूस के खोल को काटते हैं तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। हालांकि इन राइफलों को अंग्रेजी सरकार अपनी सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए लायी थी परन्तु भारतीय सैनिकों को ऐसा विश्वास हो गया कि ये राइफलें और कारतूस उनके धर्म को भ्रष्ट करने के लिए लायी गयी थीं। सैनिक अन्य कारणों से तो पहले से ही नाराज थे ही इस बात ने उन्हें एकदम से भड़का दिया।

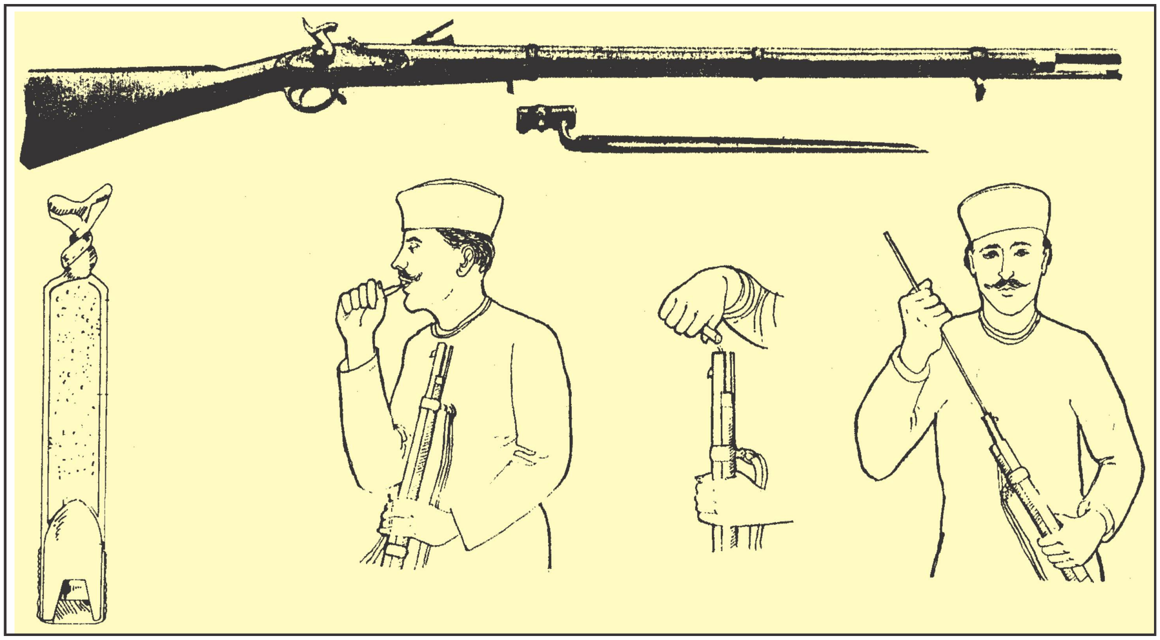

fp= 1 &^bUQhyM jkbQy vkj mlesa dkjrwl Hkjrk gqvk lSfud

fonkg dk vkjHk & मार्च 1857 में बैरकपुर छावनी के एक युवा सिपाही मंगल पाण्डे ने नए कारतूस और राइफल को लेने से इन्कार कर दिया। दबाव डालने पर उसने अपने अफसर पर हमला कर दिया। उसे गिरफ्तार करके तुरंत फाँसी पर लटका दिया गया। इसके कुछ दिनों के बाद मेरठ छावनी के 90 सैनिकों ने भी ऐसा ही किया। उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया एवं 10 वर्षों की सजा सुनाई गई। इस घटना ने उस छावनी के सभी भारतीय सैनिकों को भड़का दिया। 10 मई 1857 को उन्होंने पूरी छावनी में विद्रोह कर दिया। उन्होंने अपने साथियों को छुड़ाया, अपने अफसरों की हत्या कर दी एवं शस्त्रागार लूट लिये। उन्होंने छावनी से निकल कर मेरठ शहर में भी अंग्रेजों और उनके समर्थकों के साथ लूट–पाट की। सैनिकों ने सरकारी खजाने को भी अपना निशाना बनाया। फिर वे दिल्ली की ओर निकल गए। दिल्ली पहुंच कर उन्होंने शहर में लूट–पाट मचाते हुए अंग्रेजी सरकार के प्रशासनिक केन्द्रों को ध्वस्त कर दिया। पूरे शहर में अराजकता की स्थिति बन गई तथा अंग्रेजों के नियंत्रण से दिल्ली शहर निकल गया। इन विद्रोही सिपाहियों ने मुगल बादशाह को अपना नेता घोषित किया तथा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध उन्हीं के निर्देशन में संघर्ष चलाने का

फैसला लिया। सैनिकों के इस कार्य में खास बात यह रही कि मेरठ और दिल्ली दोनों शहरों में शहरी लोगों का एक बड़ा वर्ग उनका साथ दे रहा था।

fp= 2& exy ik.M

fp= 3 & cgknj 'kkg tQj

xfrfof/k& fonkgh lfudk u exy ckn'kkg cgknj 'kkg tQj dk viuk urk D;k pquk gkxk

cxkor Qlyu yxh& जैसे–जैसे दूसरी सैनिक छावनियों एवं जमींदारों किसानों तथा शहरियों को मेरठ और दिल्ली की घटनाओं का पता चला वे लोग भी अंग्रेज सरकार के विरोध में सक्रिय होने लगे। यह खबर कि दिल्ली पर से अंग्रेजों का अधिकार खत्म हो गया है एवं मुगल बादशाह ने भी भारतीय सैनिकों को अपना समर्थन दे दिया है, अंग्रेजी सरकार से असंतुष्ट सभी लोगों को एक बड़े अवसर की तरह दिखी। ज्यादातर असंतुष्ट राजाओं, नवाबों और जमींदारों ने यह महसूस किया कि अगर भारत में फिर से मुगल बादशाह का शासन आ जाएगा तो वे पहले की तरह बेफ़िक्र होकर अपना काम कर सकेंगे। इसलिए अगले कुछ महीनों में लगभग पूरे उत्तर भारत में अंग्रेजी सरकार का विरोध शुरू हो गया। (इसे आप मानचित्र–1 में देख सकते हैं।) प्रत्येक जगह सैनिकों ने विद्रोह आरंभ कर दिया और लोगों ने उनका समर्थन किया। इन विद्रोहों का नेतृत्व या तो जमींदार या नवाब कर रहे थे या फिर वैसे राजा जिनका राज्य अंग्रेजों ने छीन लिया था। दिल्ली के बाद कानपुर, लखनऊ, झाँसी, आरा इत्यादि जगहों पर विद्रोहियों ने अंग्रेजी शासन को लगभग समाप्त कर दिया। कानपुर में मराठों के आखिरी पेशवा बाजीराव द्वितीय (कक्षा सात में आपने इनके बारे में जाना था) के दत्तक पुत्र नाना साहब ने इसका नेतृत्व किया। अंग्रेजों ने इन्हें मिलने वाली पेंशन बंद कर दिया था। इनके प्रमुख सहयोगी तात्या टोपे और अहमदुल्लाह थे। लखनऊ में बेगम हजरत

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

महल जिनके राज्य अवध को अंग्रेजों ने हड़प लिया था (देखें पाठ दो) विद्रोह का नेतृत्व कर रहीं थीं। इनका समर्थन यहाँ के किसानों ने बड़े पैमाने पर किया। विद्रोह का एक और बड़ा केन्द्र झाँसी था। वहाँ की रानी लक्ष्मीबाई ने विद्रोही सैनिकों के साथ मिलकर अंग्रेजी सरकार को कड़ी चुनौती दी। इनके राज्य को भी अंग्रेजी शासन ने छीन लिया था।

fp= 4 & ukuk lkgc

fp= 5 & rR;k Vksi

fp= 6 & jkuh y{eh ckb

fp= 7 & cxe gtjr egy

फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्लाह शाह ने लोगों की एक बड़ी फौज इक्ट्ठी कर ली थी और बेगम हजरत महल के लिए लड़े। बरेली में सिपाही बख्त खान ने भी एक सेना तैयार की एवं मुगल बादशाह की मदद के लिए दिल्ली पहुँच गए। विद्रोह के फैलने और अंग्रेजों की जगह–जगह पराजय से लोग उत्साह में थे और लगातार सैनिकों का समर्थन कर रहे थे। उन्हें लगा कि भारत से अब विदेशी शासन का अन्त हो जाएगा। अब तक लोगों को यह समझ आ रहा था कि उनकी परेशानियों का मुख्य कारण कहीं–न–कहीं यह विदेशी सरकार ही थी।

Developed by: www.absol.in

1857 dk fonkg vkj fcgkj

आप बाबू कुँवर सिंह के नाम से जरूर परिचित होंगे। उनके जन्म दिन पर आपके विद्यालय में छुट्टी भी रहती है। अपने राज्य बिहार के आस पास के इलाके में 1857 में हुए विद्रोह के वे प्रमुख नेता थे। इसलिए आज तक हम उनको याद करते हैं। कुँवर सिंह आरा के पास स्थित जगदीशपुर के जमींदार थे लेकिन उनकी जमीनदारी अंग्रेजों ने छीन ली थी। विद्रोह की योजना बनाने में तो वे शामिल नहीं थे लेकिन जैसे ही दानापुर छावनी के सैनिकों ने विद्रोह किया और आरा की ओर बढ़े, कुँवर सिंह अपने साथियों के साथ उनसे मिल गए और उनका नेतृत्व संभाल लिया। असल में इस बगावत के पहले से ही बिहार में वहाबी आंदोलन के रूप में अंग्रेजी सत्ता को चुनौती मिल रही थी। वहाबी आंदोलन के प्रमुख नेता पटना के दो प्रतिष्ठित मौलवी विलायत अली और इनायत अली थे। इन दोनों भाइयों ने अंग्रेजी सरकार का प्रत्येक स्तर पर विरोध किया था। पटना शहर एवं अन्य जगहों पर इनके समर्थकों की संख्या काफी बड़ी थी। इसलिए जैसे ही अंग्रेजों को सैनिकों के बगावत की खबर मिली वे पटना शहर को बचाने के लिए सक्रिय हो गए। वहाबी नेताओं को गिरफ्तार कर शहर में कठोर कानून लागू कर दिया गया। इसलिए संभवतः दानापुर के विद्रोही सैनिक पटना के नजदीक होने के बावजूद यहाँ नहीं आकर आरा की तरफ चले गए। उस समय के तीन प्रमुख वहाबी नेताओं मोहम्मद हुसैन, अहमदुल्लाह एवं वाएज़उल हक को अंग्रेजों ने धोखे से गिरफ्तार कर लिया। लोगों ने इसका विरोध किया। इस विरोध के नेता पीर अली को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर उनके सहयोगियों के साथ उन्हे फाँसी दे दी। इस तरह की कठोर कार्रवाई से पटना विद्रोह से लगभग शांत रहा।

xfrfof/k& d|oj flg d thou l vkidk D;k lh[k feyrh g \ crk,A

ogkch vkUnkyu& मुसलमानों के सामाजिक और धार्मिक स्थिति में बदलाव के लिए अरब में अब्दुल वहाब के द्वारा यह आन्दोलन शुरू हुआ। उन्हीं के नाम पर इस आन्दोलन का नाम 'वहाबी आन्दोलन' पड़ा। भारत में यह बरेली के 'सैयद अहमद'

द्वारा शुरू किया गया और पटना इसका बड़ा केन्द्र था। यहाँ के एक परम्परागत धर्मनिष्ट और विद्वान मुस्लिम परिवार के संरक्षण में यह आन्दोलन काफी प्रभावी हुआ। इसके दो प्रमुख नेता विलायत अली और इनायत अली सहोदर भाई थे। यद्यपि यह धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन था लेकिन आगे चल कर इस आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजी सरकार को भारत से समाप्त करना हो गया था। इसके लिए इन दोनों भाईयों ने सैनिक प्रयास भी किए थे। यह आंदोलन 1822 से 1868 तक सक्रिय रहा।

fp= 8 & d|oj fl|g

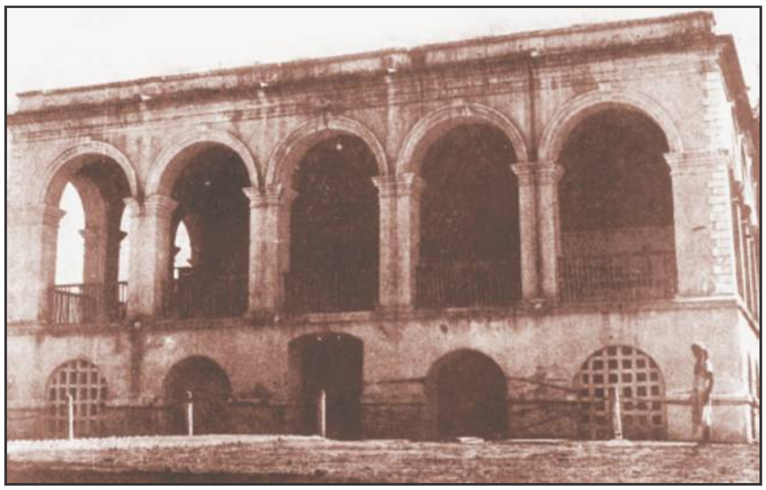

fp= 9 & d|oj fl|g dk if=d nyku

कुँवर सिंह ने दानापुर सैनिक छावनी के सैनिकों के सहयोग से आरा शहर से अंग्रेजी नियंत्रण को समाप्त कर दिया एवं वहाँ कुछ दिनों के लिए अपनी सरकार भी चलाई। इनके विद्रोह का प्रभाव बिहार से सटे उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों पर भी रहा। उन्होंने वहाँ बनारस, जौनपुर, आजमगढ़, बलिया इत्यादि क्षेत्रों की यात्रा की एवं अंग्रेजी सरकार को समाप्त करने के लिए जमींदारों व किसानों को प्रेरित किया। अंग्रेजी सरकार ने उस वक्त उनकी गिरफ्तारी के लिए 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। अंग्रेजी सरकार से संघर्ष के क्रम में ही घायल होने के कई दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई। उनके निधन के बाद उनके भाई अमर सिंह के द्वारा छापामार युद्ध शैली (छिपकर हमला करना) से अंग्रेजी सरकार को काफी

परेशान किया गया। अंततः वे भी गिरफ्तार कर लिये गए उनपर मुकदमा चलाया गया और इसी दौरान उनका निधन हो गया।

^vk[kks n[kk xnj* ¼>klh es vxzstks ds vR;kpkj dk fooj.k½ ^ek>k iokl* ls

इधर चारो ओर के फाटकों से गोरे अंदर आने लगे और निर्जन करना शुरू किया। पाँच बरस से अस्सी बरस तक जो पुरुष दिखा उसे गोली या तलवार से मार दिया। शहर के एक भाग में आग लगा दी। उस समय शहर में ऐसा आत्रनाद फैला जिसका अंत न था। भय से आतुर लोग बुद्धिहीन से इधर–उधर भाग रहे थे। भागते–भागते ही बहुत से गोलियाँ खाकर मुर्दे हो गए। कोई इस गली में लपका तो कोई घर के तहखाने में भागा। कोई दाढ़ी–मूंछें साफ कर स्त्री वेश धारण करके बैठ गया। कोई खेतों में जा छिपा। इस तरह अपने प्राण बचाने के लिए जिसको जो सूझा उसने वही किया। गोरे लोग घरों में घुस कर लोगों को मारने एवं उनके धन को लूटने लगे। जो स्वेच्छा से अपना धन दे रहे थे उसे वे छोड़ देते थे।'

fonkgh D;k pkgr Fk – आप यह सोच रहे होंगे कि विद्रोह में शामिल राजाओं और जमींदारों को इस बगावत से क्या फायदा होने वाला था। हमने पहले देखा है कि वे सरकार से असंतुष्ट थे और इस विद्रोह के

;g vi'k ^ek>k iokl* uked iLrd dk gA bld y[kd egkjk"V d ,d cküã.k fo".kq HkÍ xkM l gA m l le; o >kl h d bykd e y{ehckb d lkFk FkA mUgku m l le; dk fooj.k viu ?kj igpdj luk;kA ?kj l o eFkjk d ,d ;K e Hkkx yu vk, FkA mlh le; cxkor gk xbA mll tM db fooj.k mUgku bl fdrkc e nh gA ;gk m ldk ,d NkVk v'k fn;k x;k gA

द्वारा अपना खोया हुआ शासन वापस चाहते थे। 25 अगस्त 1857 को विद्रोहियों द्वारा जारी किये गये एक घोषणा पत्र जिसे 'आजमगढ घोषणा पत्र' के नाम से जाना जाता है से हमें इस विद्रोहियों के उद्देश्यों को समझने में मदद मिलती है। इस घोषणा पत्र में जमींदारों को यह

कहा गया कि उनकी जमीन छीनी नहीं जाएगी और अपने क्षेत्र में उनका राज पहले जैसा बना रहेगा। व्यापारियों को सभी वस्तुओं के व्यापार की आजादी होगी। सरकारी नौकरी वाले भारतीयों से कहा गया कि उन्हें शासन में ऊँचा पद दिया जाएगा और उनके साथ कोई भेद–भाव नहीं होगा। पंडितों एवं मौलवियों को धर्म की रक्षा करने के लिए साथ देने को कहा गया। बुनकरों एवं शिल्पकारों को भी सरकारी सहायता का भरोसा दिया गया।

इस घोषणा पत्र से यह पता चलता है कि जो वर्ग अंग्रेजी सरकार की नीतियों से सबसे अधिक प्रभावित था उन्हें बगावत की सफलता के बाद पहले की स्थिति में लाने का आश्वासन दिया गया था। विद्रोहियों ने बगावत के दौरान जिन थोड़े दिनों तक अलग–अलग जगहों पर शासन किया उसमें उन्होंने अंग्रेजों के पहले की मुगल कालीन व्यवस्था को ही अपनाया।

fonkg dk nck fn;k x;k & आप सोच रहे होंगे कि जब भारतीय विद्रोही अंग्रेजी राज को समाप्त करने पर तुले थे, अंग्रेजों को मारा–काटा जा रहा था, उनकी सम्पत्ति लूटी जा रही थी, तो अंग्रेज सरकार व सेना क्या कर रही थी। अपनी सरकार व अपने लोगों को बचाने के लिए उसने भी जरूर कुछ किया होगा। वे भारत से अपने शासन को ऐसे ही तो नहीं समाप्त होने देते। भारत पर अधिकार से अंग्रेजों को होने वाले लाभ के बारे में तो आप जान ही चुके हैं। उन्हें दोबारा अपनी सरकार को भारत में स्थापित करने में दो वर्ष लग गए। उन्होने इंगलैंड से और फौज मंगवाई। उन्होंने सबसे पहले दिल्ली को अपने अधिकार में लिया। मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को उनके बेटों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। उनके बेटों को उनके सामने ही गोली मार दी गयी तथा बादशाह को रंगून भेज दिया गया जहां 1862 में उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद लखनऊ पर धावा बोल उसे अधिकार में लिया गया। बेगम हजरत महल गिरफ्तारी से बचने के लिए नेपाल चली गईं। उसके बाद कानपुर को भी अंग्रेजों ने जीत लिया। नाना साहब भी नेपाल चले गए। झाँसी की रानी युद्ध करती हुई शहीद हो गई। तात्या टोपे छुप कर आदिवासियों के सहयोग से अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध चलाते रहे लेकिन एक जमींदार के धोखे के कारण पकड़ लिए गए। उन्हें फांसी दे दी गईं। कुँवर सिंह और अमर सिंह के साथ क्या हुआ इसे आप पहले ही जान चुके

हैं। आरा और आस–पास के क्षेत्रों पर नियंत्रण कायम कर लिया गया और उनके खानदानी घर को ध्वस्त कर दिया गया। विद्रोहियों को जल्द सजा देने के लिए कानून बनाया गया जिसके अन्तर्गत उन्हें फाँसी के अलावा तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा देने जैसी सजा दी गई।

xfrfof/k& lkpsa vxzstksa us lcls igys fnYyh ij gh vf/kdkj D;ksa tek;k

भारतीय विद्रोहियों के पास अंग्रेजों के एकजुट हमलों का कोई बचाव नहीं था। उनके पास उतना धन भी नहीं था। जमींदार जो नेतृत्व कर रहे थे वे तो पहले ही बर्बाद हो चुके थे वे कहाँ से मदद करते। अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षा उनके पास हथियार भी कम और कमजोर थे। जो हथियार और गोला बारूद एवं कारतूस सैनिकों ने लूटे थे वे समाप्त हो चुके थे। उसे बनाने या प्राप्त करने का दोबारा साधन नहीं था। अतः भारतीय अब परंपरागत हथियारों (तलवार, भाला) से लड़ने लगे। आप सोच कर देखें, कहाँ बंदूक और कहाँ तलवार, बंदूक की जीत तो होनी ही थी। जैसे–जैसे लोगों ने अपने नेताओं की हार के बारे में जाना उन्होंने भी अपने को उनसे अलग कर लिया। भारतीय लोग अनायास ही इस विद्रोह का हिस्सा बन गए थे। उनके पास पहले से कोई योजना नहीं थी। जो भी हो रहा था बगावत के समय ही। दूसरी बात थी कि यह विद्रोह पूरे भारत में नहीं फैला। दक्षिणी और पश्चिमी भारत इससे अछूता रहा। इसके अतिरिक्त सभी भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों का विरोध भी नहीं किया। इन्हीं सब वजहों से भारत में अंग्रेज एक बार फिर से अपनी सत्ता को स्थापित कर पाने में कामयाब रहे।

fp= 10 & fxj¶rkj cgknqj 'kkg ,oa mudk csVk

fonzksg dk cknn dk o"kZ & विद्रोह के दमन के बाद भारत में अंग्रेजी शासन के ढांचे एवं स्वरूप में काफी परिवर्तन किया गया। 1858 में ब्रिटिश संसद ने कानून पास करते हुए भारत पर से ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर सीधे ब्रिटेन की सरकार के शासन को स्थापित किया। भारत का प्रमुख प्रशासक ब्रिटिश सरकार के एक मंत्री को बनाया गया।

इसे भारत सचिव कहा गया। भारत के सभी शासकों को भरोसा दिया गया कि भविष्य में उनके राज्य को उनसे छीना नहीं जाएगा। सैनिक ढाँचे में बदलाव करते हुए यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाई गई। उनका अनुपात अब 2:5 का हो गया यानि प्रत्येक पांच भारतीय सैनिकों पर दो गोरे सिपाहियों को लगाया गया। यह भी तय किया गया कि अवध, बिहार, मध्य भारत एवं दक्षिण भारत से सिपाहियों की भर्ती करने की जगह गोरखा, सिक्ख और पठान को ज्यादा संख्या में भर्ती किया जाय। इन तीन समूहों के सैनिकों ने विद्रोह को दबाने में कंपनी को काफी सहयोग दिया था। इसी वक्त उन्होंने यह भी तय किया कि भारतीयों के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में छेड़–छाड़ नहीं की जाएगी।

इस प्रकार बगावत के बाद भारतीय शासन के स्वरूप में जो बदलाव हुआ उसके परिणाम काफी दूरगामी सिद्ध हुए। भारत के राजनैतिक क्षेत्र में इसके बाद बदलाव की शुरुआत हुई इसके विषय में आप आगे के पाठों में पढ़ेंगे।

vH;kl

vkb, fQj ls ;kn djsa&

1- lgh fodYi dk pquko

¼i½ 1857 dk foæksg dgk¡ ls vkjEHk gqvk

(क) मेरठ (ख) दिल्ली (ग) झांसी (घ) कानपुर

¼ii½ exy ik.Ms fdl Nkouh ds ;qok flikgh FksA

(क) दानापुर (ख) लखनऊ (ग) मेरठ (घ) बैरकपुर

¼iii½ >kalh esa fonzksg dk usr`Ro fdlus fd;kA

(क) कुँवर सिंह (ख) नाना साहब (ग) लक्ष्मीबाई (घ) बेगम हजरत महल

¼iv½ dqoj flag dgk¡ ds tehankj FksA

(क) आरा (ख) जगदीशपुर (ग) दरभंगा (घ) टिकारी

¼v½ ogkch vkUnksyu dk usr`Ro fcgkj esa fdlus fd;k FkkA

(क) पीर अली (ख) विलायत अली (ग) अहमदुल्ला (घ) वजीबुल हक

2- fuEufyf[kr dks tksM+s cuk,¡

(क) जगदीशपुर	(क) नाना साहब
(ख) कानपुर	(ख) कुँवर सिंह
(ग) दिल्ली	(ग) विष्णुभट् गोडसे
(घ) लखनऊ	(घ) बहादुर शाह जफर
(ङ) मांझा प्रवास	(ङ) बेगम हजरत महल

vkb, fopkj djs&

(i) जमींदार अंग्रेजी शासन का विरोध क्यों कर रहे थे?

(ii) सैनिकों में असंतोष के क्या कारण थे?

(iii) बहादुरशाह जफर के समर्थन से क्या प्रभाव पड़ा?

(iv) विद्रोह को दबाने में अंग्रेज क्यों सफल रहे?

(v) 1857 के विद्रोह में कुँवर सिंह का क्या योगदान रहा?

(vi) विद्रोहियों के उद्देश्यों को अपने शब्दों में व्यक्त करें?

(vii) विद्रोह के बाद अंग्रेजी शासन के स्वरूप में क्या बदलाव आया?

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

vkb, djds ns[ks&

(i) विद्रोह के समय अगर आप होते तो अंग्रेजी शासन का विरोध किस तरह से करते–सहपाठियों से चर्चा करें।

(ii) 1857 के विद्रोह के महत्व पर शिक्षक के सहयोग से वर्ग में परिचर्चा करें।